International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(I), January - March, 2023, pp. 111-114

आत्मनिर्भर भारत में महिला उधमिता का परिवेसात्मक अध्ययन

विकास आनन्द*

सार

आत्मनिर्भर भारत के विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महिलाओं का योगदान प्राप्त करने का सबसे प्रभावी तरीका उनका आर्थिक विकास करना ही है। महिला उद्यमिता देश को आत्मनिर्भर बनाने का अहम पहलू है। इससे रोजगार के अवसर जुटाकर अर्थव्यवस्था तो मजबूत होती है, महिलाओं का भी सामाजिक और व्यक्तिगत दृष्टि से अत्थान होता है। इस लेख में महिला उद्यमियों के महत्व उनके सामने आने वाली चुनौतियों, भारतीय अर्थव्यवस्था में अनकी अहम भूमिका और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उनके योगदान के बारे में विस्तार से बताया गया है। भारत की आर्थिक नीतियो में हमेशा से ही खास तौर से महिलाओं समेत गरीबों, हाशिये के लोगों और वंचित तबकों के विकास पर जोर दिया गया है। सरकार की योजनाओं में सामाजिक लामबंदी और पूंजी निर्माण, सामुदायिक उद्यमिता तथा समुदाय के नेतृत्व में उत्पाद और उत्पादकता विकास के महत्व को रेखांकित किया गया है। भारत में नीति निर्माताओं और योजनाकारों के लिये आर्थिक और सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण रही है। प्रधामन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 जून 2022 'उद्योमि भारत ' का शंखनाद किया जो उद्यामिता के महत्व और इसकी क्षमता को रेखांकित करता है। पिछले दो वित्त वर्ष कोविड 19 के प्रतिकूल प्रभाव से ग्रस्त रहे। इस वैश्विक महामारी की वजह से अन्य क्षेत्रों की तरह ही स्वरोजगार करने वालों को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। केंद्र सरकार ने इस स्थिति से उबरने के लिए एक समग्र नजरिय अपनाया जिसके सकारात्मक संकेत दिखायी देने लगे है।

शब्दकोशः *आत्मनिर्भर भारत, वैश्विक महामारी, पूंजी निर्माण, सामुदायिक उद्यमिता, अर्थव्यवस्था।*

प्रस्तावना

महिला उद्यमियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है और विभिन्न उद्योगों में उन्हें पहचान और मान्यता भी मिल रही है। रोजगार के नए अवसर जुटाने और सकल घरेलू उत्पाद बढ़ाने तथा गरीबी दूर करने और सामाजिक समावेशन के माध्यम से महिलाएं उद्यमशीलता और आर्थिक विकास से जुड़ी गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान कर रही है। सरकार महिला उद्यमिता का महत्व समझती है और महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन देने की कई पहल कर रही है। एक अध्ययन के अनुसार महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने से उद्यमों की सफलता पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। उद्यमशीलता को प्रोत्साहन देने से जुड़े विभिन्न पहलुओं में आकांक्षा, कौशल और अनुभव, परिवार का समर्थन बाजार (बिक्री) संभावना, स्वतंत्रता, सरकारी सहायता और कार्य संपन्न करने का संतोष आदि भाामिल हैं।

* शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, करेरा, शिवपुरी, म.प्र.।

वर्तमान परिवेश में महिला उद्यमशीलता की अवधारणा का विश्लेषण और व्याखा करनाः और भारतीय उद्यमियों के समक्ष चुनौतियों और विशेष पहलुओं की व्यापक समीक्षा करना तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों की भूमिका और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उनके योगदान पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।

महिला उद्यमी वही है जो अपना उद्यम भुारू करने, उसकी व्यवस्था संभालने और उसके लिए वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करने के सभी दायित्व निभाती है। भारत सरकार के अनुसार महिला उद्यमी होने के लिए उद्यम की वित्तीय भागीदारी मे कम से कम 51 प्रतिशत योगदान होना आवश्यक है। इस तरह प्रमुख वित्तीय भागीदारी होने पर ही वह महिला उद्यमी की श्रेणी में मानी जाएगी।

महिला उद्यमिता और आर्थिक प्रगति

उद्यमिता की समुचित संस्कृति का अभाव तथा सामुदायिक व्यावसायिक इकाइयों में ऋण प्रबंध से संबंधित अड़चने अनेक आर्थिक और अन्य समस्याओं को जन्म देती हैं। लोग संगठित हों और उन्हें बुनियादी सुविधाएं मुहैया करायी जाये ंतो वे आर्थिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाने में सक्षम होंगे तथा अपने और समूचे समाज के कल्याण में सकारात्मक भूमिका अदा करेंगें। किसी नये आर्थिक उद्यम में लाभ अर्जन के लिये नये आर्थिक उद्यम में लाभ अर्जन के लिये अवसर का सही चुनाव या परियोजना की व्यावहारिकता महत्वपूर्ण मानी जाती है। सक्षम प्रणालियों के जरिये ही अवसरों तथा भौतिक और मानव संसाधनों का सफतापूर्वक दोहन किया जा सकता है। एसएचजी आपस में ऋण के लेन –देन और बैंक कर्ज संपर्क गतिविधियों के जरिये अपनी आर्थिक इकाइयों के संचालन के लिये संसाधन पैदा करते हैं। लेकिन पेशे का उनका चुनाव अक्सर अपनी गतिविधियों के प्रबंधित, संचालन और संवहन की उनकी क्षमता के अनुरूप नहीं होता । भास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने उद्यमिता के मुख्यतः तीन केन्द्रीय पहलुओं की पहचान की है। अनिश्चितता और जोखिम, प्रबंधन की दक्षता तथा सकारात्मक अवसर या नवोन्मेष। ये तीनों पहलू लाखों एसएचजी के सशक्तीकरण की जरूरत को रेखांकित करते हैं। यदि महिला एसएचजी के स्वामित्व और संचालन वाले सामुदायिक व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का सशक्तीकरण किया जाये तो वे स्थानीय संसाधनों का प्रभावी इस्तेमाल करते हुए इन्हें अपने क्षेत्र की जरूरतों और उपभोक्ताओं की स्वीकार्यता के अनुरूप लाभकारी उत्पादों में परिवर्तित कर सकेंगे। इससे रोजगार के अवसर सुनिश्चित होंगे। प्रदर्श 1 में एसएचजी इकाइयों के समुचित पेशागत चुनावों और समुदाय आधारित कार्रवाइयों के जरिये दुर्लभ संसाधनों के आर्थि विकास और गरीबी उन्मूलन के लिये रोजगार और आय सृजन की गतिविधियों में परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रदर्शित किया गया है। जरूरत इस बात की है कि प्रस्तावित आर्थिक उपक्रमों का समुचित मूल्यांकन हो तथा नवोन्मेषी और इच्छित व्यावसायिक मार्गों के दोहन के साथ ही पेशे की वित्तीय और भौतिक व्यावहारिकता का कठोर विश्लेषण किया जाये।

महिला उद्यमिता का अर्थ

महिला अद्यमी वे हैं जो अपना उद्यम भुारू करने, उसकी व्यवस्था संभालने और उसके लिए वित्तीय संसाधनों प्रबंधन करने के सभी दायित्व निभाती हैं। भारत सरकार के अनुसार महिला उद्यमी के पास वित्तीय भागीदारी में कम से कम 51 प्रतिशत योगदान होना अनिवार्य है। प्रमुख वित्तीय भागीदार होने पर ही वह महिला उद्यमी की श्रेणी में मानी जाएंगी।

सरकार के विभिन्न कदम

अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महिला उद्यमियों की भूमिका महत्वपूर्ण है, इसलिए महिलाओं को उद्यम चलाने से जुड़ी गतिविधियों की ओर आकर्षिक करने का वातावरण तैयार करना जरूरी है। भारत सरकार ने अपने उद्यम भुारू करने वाली महिलाओं के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम और विकास के साथ–साथ रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के कार्यक्रम तैयार किए हैं।

- **विशेष लक्षित समूह :** देश के सभी प्रमुख विकास कार्यक्रमों में महिलाओं को विशेष लक्षित समूह मानने के उददेश्य से यह सुझाव लाया गया था।

- **नए उपकरण विकसित करनाः** उपयुक्त प्रौद्योगिकी, उपकरण और कार्य–विधियां अपनाकर महिला उद्यमियों की कार्यकुशलता और अत्पादकता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए।
- **हाट –व्यवस्था में सहायताः** यह सुझाव महिला उद्यमियों के उत्पादों की बिक्री की समुचित व्यवस्था करने में आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने के उददे्श्य से लाया गया था।
- **निर्णय लेने की प्रक्रिया :** यह सुझाव महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाामिल करने के विचार से लाया गया हैं इसके साथ ही ऐसे अनेक संगठन हैं जो भारत में महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। ये संगठन विकास संबंधी समर्थन उपलब्ध कराके इन महिला उद्यमियों की मदद करते है।
  - **महिला उद्यमिता मंच (डब्ल्यू.ई.पी.)** महिला उद्यमिता मंच (डब्लयू.ई.पी.) की स्थापना रीति आयोग ने देश भर की उभरती युवा महिला उद्यमियों के लिए उपयुक्त परिवेश उपलब्ध कराने के उददे्श्य से की थी। इस पहल को लागू करने और बढ़ावा देने के वास्ते नीति आयोग ने सिडबी (एसआईडीबीआई) को भागीदार बनाया है।
  - **प्रधानमंत्री मुद्रा योजनाः** भारत सरकार द्वारा भाुरू की गई प्रमुख योजनाओं में भाामिल यह योजना उन उत्साही महिला उद्यमियों को समर्थन और प्रोत्साहन देने के उददे्श्य से चलाई गई है जो ब्यूटी पार्लर खुदरा या ट्यूशन केन्द्र जैसी कम लागत और आसानी से भाुरू किए जाने वाले स्टार्ट–अप लगाना चाहती है।
  - **स्त्री भाक्ति ऋण :** भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) द्वारा चलाई जा रही यह अनूठी योजना महिला उद्यमियों को कई रियायतें देने के लिए भाुरू की गई है। इस योजना का लाभ पाने के लिए महिला उद्यमियों को पहले उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) में नाम दर्ज कराना होगा जिसमें व्यापार सफलतापूर्वक चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता है और उनकी कार्यकुशलता बढ़ाई जाती है।

परिकल्पना

महिला उद्यमी भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की सबसे अहम कड़ियों में से हैं। महिलाओं की प्रगति के लिए हम नीचे दिए गए सुझावों पर विचार कर सकते हैं–

- महिलाओं में उद्यमिता कौशल विकसित करने के लिए कम से कम लागत के या मुफ्त प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।
- महिलाओं को बचपन से लेकर उच्च शिक्षा तक निःशुल्क पढ़ाई की सुविधा उपलब्ध कराने वाले शिक्षण संस्थान खोले जाएं।
- उद्यमिता से जुड़ी गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाए।
- सकरकारी प्रोत्साहनों और योजनाओं के प्रति उन्हे जागरूक बनाए जाए।
- योजनाओं का लाभ पाने के वास्ते कागजी कार्रवाही को कम से कम किया जाए और पूरी प्रक्रिया सरल बनाई जाए।

निष्कर्ष

महिला को विविध कार्य करने होते हैं और अनेक दायित्व निभाने पड़ते हैं जिससे उसे सामाजिक बंधनों के कारण अपना उद्यम चलाने के वास्ते कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन देने के उपाय उपलब्ध कराए गए है। भारतीय महिलांए सरकार और अन्य एजेंसियों द्वारा मुहैया किए जा रहे विकास अवसरों के बारे में अनभिज्ञ रहती हैं। महिलाओं को सफलता उद्यमी बनाने में सहायता देने के लिए उन्हें विशेष प्रशिक्षण की सुविधांए दी जानी चाहिए ताकि उनकी प्रतिभा और कौशल को निखारा जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल मधुरिमा, एंड सहाय शिखा, 2008, विमेन इन फैमिली बिजनेस, इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस हैदराबाद में फैमिली बिजनेस पर आयोजित प्रथम एशियन इनविटेशनल कांफ्रेंस में प्रस्तुत ।
2. हैडबुक ऑन विमेन–ओन्ड एमएमईज, चैलेजेज एंड एपॉर्चुनिटीज इन पॉलिसेज एंड प्रोग्राम, इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर नॉलेज इकॉनामी एंड एंटरप्राइज डेवलपमेंट।
3. वी कृष्णमूर्ति और आर. बालसुब्रमणि ''मोटिवेशनल फैक्टर्स अमंग विमेन एंत्रप्येन्योर्स एंड देयर एंत्रेप्रेन्योरिअल सक्सेस : ए स्टडी'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्ज एंड बिजनेस स्ट्रेटजी।
4. बोवेन, डोनाल्ड डी और हिश रॉबर्ट डी (1986) द फीमेल एंत्रप्रेन्योर : ए कैरियर डेवेलपमेंट पर्सपेक्टिव, अकेडमी ऑफ मैनेजमेंट रिव्यू: वॉल्यूम अंक 3 पृष्ठ 393–407.
5. मायर्स, एस.पी. 1984, द कैपिटल स्ट्रक्चर पजल।
6. व्हाई रिसर्च नीडेड इन विमेन एंत्रप्रेन्योरशिप इन इंडिया : ए व्यूप्वाइंट आर्टिकल इन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकॉनोमिक्स फरवारी–2018.
7. विकास समर्पित मासिक योजना सितम्बर 2021

❖◆❖